नकारात्मकता का अंत....

रावण का अंत

आज की दुनिया जहाँ पर इतने सारे मनुष्य आत्माओं का निवास है, और सभी किसी न किसी बात में थोड़े-बहुत उदास हैं। उदासी का कारण अगर आप जानना चाहें तो ज़्यादातर जो है उनके पास, उससे वो संतुष्ट नहीं हैं। जो नहीं है, वही चाहिए। और जो नहीं है, उसके लिए विकारों का सहारा माना झूठ बोलना, चोरी करना, धोखा देना, ऊपर-नीचे करना, ये सारी चीज़ें करते हैं। कथाओं में प्रचलित मान्यता है, जब रामचन्द्र जी ने अयोध्या लौटने के बाद राज्य व्यवस्था सुदृढ़ की, उसके बाद उन्होंने गुरू वशिष्ठ से आज्ञा लेकर कहा कि अब हमारे जाने का समय आ गया है। तो उसी समय उनके बहुत सारे प्रजाजन वहां पहुँच जाते हैं और कहते हैं कि प्रभु, आप हमें छोड़कर न जाइये, तब राम सोचने लगते हैं कि अब क्या करें! तब गुरू वशिष्ठ ने राम को समझाया कि आप परेशान न हों, इन सभी ने भी आपके लिए आपके राज्य में रहते हुए बहुत सारी चीज़ों का अर्थात् भोग-विलास का त्याग किया, अपनी सुख-सुविधाओं को छोड़कर सिर्फ आपका कार्य मर्यादा पूर्वक करते रहे। ये सभी भी देवता कुल के ही हैं, इस समय मनुष्य रूप में आपके साथ सहयोगी थे।

तो इस कथा से एक बात पूरी तरह से साबित होती है कि राम(परमात्मा) का कार्य करने के लिए हम सभी को भी जो यह छोटी-छोटी इच्छाएं हैं, छोटी-छोटी कामनाएं हैं, इन सबका त्याग करना अति आवश्यक है। समय की गति तीव्रता से बढ़ रही है, और इन इच्छाओं के बदले में हमारे संकल्पों की एक बहुत बड़ी फहरिस्त जो नकारात्मकता को दावत दे रही है। आप सबको ज्ञात हो कि रावण का अर्थ ही है रुलाने वाला, रुदन करने वाला। तो रुलाता कौन है हमें, जब हमारी इच्छाएं पूरी नहीं होती हैं, कामनायें पूरी नहीं होती हैं। और इन इच्छाओं और कामनाओं में सिर्फ और सिर्फ विकार है क्योंकि ये दूसरे के लिए है, स्वार्थ के लिए है। कुछ भी परमार्थ के लिए नहीं है। तो बात भाव की ही है, जब इस दुनिया में सभी आए हैं, सभी का कर्म और सबका भाग्य निश्चित रूप से उनके साथ होगा ही। फिर भी स्वार्थ के वश हम सबके अंदर जो भाव उत्पन्न होते हैं, उससे नकारात्मकता इतनी तीव्रता से फैलती है, कि एक व्यक्ति का एक नकारात्मक संकल्प हज़ारों व्यक्ति को ऐसा बनने के लिए मजबूर कर देता है। कहा जाता है कि रावण को जब रामचन्द्र जी तीर से मार रहे थे तो उसका गला कटता था, फिर जुड़ जाता था।

तो गला कटना और जुड़ना, ये निशानी है कि एक दिन हम संकल्प करते हैं कि आज से हम यह कार्य नहीं करेंगे, लेकिन अगले ही पल कहीं आस-पास किसी को ये करते देख लिया, या कहीं पढ़ लिया या सुन लिया, तो वैसा करते ही हमारे अंदर वो भाव उत्पन्न हो जाते हैं। माना पुनः सिर लग गया। इसको आम भाषा में हम देह-भान या देह-अभिमान कहते हैं। मतलब छोटा-सा एक सुराक भी मिला, छोटा-सा एक अनुभव भी हुआ, तो वो अनुभव भी हमारे सिर को पुनः जीवित कर देता है। इसीलिए उसे जड़ से सुखाने के लिए दृढ़ता के संकल्प को लाना पड़ता है।

तो रावण अमर नहीं था। लेकिन उसकी नकारात्मकता का बल उसको नकारात्मक रूप से अमर बना देता है। ऐसे ही हम सभी आज दुनिया के लोग हैं। चारों तरफ सिर्फ नकारात्मकता ही है। सकारात्मक व्यक्ति अगर सोचना भी चाहे तो भी वो उस माहौल में रहकर वैसा ही सोचता है। इसलिए अगर हमको सच में रावण से युद्ध करना है, या सच में विकारों से जीतना है या सच में रोने से बचना है, रुलाने से बचना है, शक्तिशाली बनना है, तो जड़ से सकारात्मक संकल्पों की नींव डालें। इसीलिए उसमें नाभी में तीर मारते हुए दिखाया गया माना एकदम बीज या जड़ में इतने सकारात्मकता के भाव भर जायें कि वो नकारात्मकता पूरी तरह से सूख जाये और एक नया जीवन मिले। तो हर एक आत्मा आज इस तरह से अपना जीवन व्यतीत कर रही है। उसमें से चंद लोग हैं जो बहुत अच्छा सोच रहे हैं, अच्छी तरह से अपने ऊपर काम भी कर रहे हैं। लेकिन अगर पूरी दुनिया में इस भाव को लाना है तो हमें निरंतर सकारात्मक संकल्पों का एक जखीरा तैयार करना होगा। समय बदलेगा और रावण का अंत निश्चित है।

दिल की बात

आज अमृतवेला के पावन क्षणों में मुझे शिवबाबा के यह मधुर महावाक्य याद आए.... मीठे बच्चे! माया को वश करने का मंत्र है मनमनाभव, यही मंत्र तुम्हें पवित्र बना देता है। याद की यात्रा ही सेफ्टी का नम्बरवन साधन है। इसी याद से ही तुम्हारे चरित्र सुधरते हैं। याद से ही पतित कर्मेन्द्रियां शांत हो जाती हैं। याद से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। सदा स्वस्थ रहेंगे, याद में समाई हुई आत्मा के चेहरे से अलौकिक नूर बरसता है।

जो बच्चे निरन्तर परमात्मा की याद में रहते हैं वह विनाश में विनाश को नहीं पाएंगे लेकिन स्वेच्छा से शरीर छोड़ेंगे। मैं विनाश लीला के समय मास्टर विश्वकल्याणकारी की स्टेज पर स्थित होकर अपना पार्ट बजाने वाली साक्षी दृष्टा आत्मा हूँ। विनाश हो रहा है। कहीं बॉम्ब ब्लास्ट, कहीं भूकंप, कहीं बाढ़ तो कहीं मारकाट मची हुई है। हर तरफ मौत के नजारे हैं। ऐसे में प्रभू के परवाने, फरिश्ते रूप में विचरण कर रहे हैं और शांति की, शीतलता की, शक्ति की किरणें बिखेर रहे हैं। मैं आत्मा दुःखी-अशांत आत्माओं को शक्तिशाली दृष्टि दे रही हूँ। बाबा के फरिश्ते बच्चों की दृष्टि पड़ने से दुःखी-अशांत आत्माएं अपनी पीड़ाओं से छूटकर मुक्ति, जीवन मुक्ति को पा रही हैं। ऐसे समय में मनुष्य आत्माओं द्वारा किया गया छोटे से छोटा पाप कर्म, सूक्ष्म से सूक्ष्म छिपा हुआ विकर्म भी एक भयानक रूप में उनके सामने आ रहा है।

आत्माएं अपने पापों से मुक्त होने का उपाय कर रही हैं। पर कोई भी उपाय उन्हें मुक्त नहीं कर पा रहा, अब तो बस एक ही दर है जो इन दुःखी आत्माओं को मुक्ति, जीवन मुक्ति की राह दिखाने में मग्न है, वह है परमात्मा का द्वार।

परमात्म दुलारे बच्चे दुःखों के हल्के से सेंक से अछूते हैं। प्रकृति के पांच तत्व हम विश्व सेवाधारियों की सहायता कर रहे हैं। यहाँ एक तरफ मौत के नज़ारे हैं वहीं बाबा के लाडले बच्चे फरिश्ते रूप में समस्त आत्माओं को साकाश दे रहे हैं। आत्माएं अपने ज्योति स्वरूप में अपने ज्योति के देश परमधाम घर की राह पाकर घर लौट रही हैं...मुक्त हो रही हैं।

पानीपत-हरियाणा। ज्ञान मानसरोवर में निर्मित दादी जानकी पॉज़िटिव हेल्थ केयर सेंटर में आये रणबीर गंगवा,डिप्टी स्पीकर विधान सभा,हरियाणा, संजय भाटिया,मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट,लोक सभा,करनाल, बच्चन सिंह आर्य,पूर्व मंत्री,हरियाणा आदि गणमान्य लोगों के साथ ब्र.कु. सरला दीदी,क्षेत्रीय संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़ तथा ब्र.कु. भारत भूषण,निदेशक,ज्ञान मानसरोवर। इस हेल्थ केयर सेंटर में अभी तक लगभग 13 हज़ार मरीज स्वास्थ्य लाभ ले चुके हैं और यहाँ आस-पास के लोगों का मुफ्त में जाँच होता है और मुफ्त दवाइयाँ दी जाती हैं।

अहमदनगर-महा.। समाज सेवी श्री अन्ना हज़ारे को उनके राळेगणसिद्धि स्थित निवास स्थान पर रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजेश्वरी बहन। इस मौके पर ब्र.कु. सुप्रभा तथा ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके उपस्थित रहे।

पटना-कंकड़ बाग। विश्व हिन्दू परिषद के नये राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने पर पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित डॉ. रविन्द्र नारायण सिंह को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. संगीता बहन।

नामली-म.प्र.। नगर परिषद् नामली के हरदेश्वर महादेव मंदिर में हर घर तुलसी पौधा वितरण कार्यक्रम में वृक्षारोपण करते हुए श्री श्री 1008 मंगलदास महाराज, श्री श्री 1008 पंडित दिनेश व्यास, ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. संगीता बहन तथा अन्य।

जलगांव-महा.। जिला पाचोरा तहसील के कलमसारा गांव में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता अशोक दादा चौधरी एवं उनकी धर्मपत्नी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी जलगांव जिला की अध्यक्षा वंदना ताई चौधरी से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् उनको मधुबन का ईश्वरीय प्रसाद देते हुए ब्र.कु. दत्तु भाई,शांतिवन।

भादरा-राज.। डॉ. राजेश को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चन्द्रकान्ता बहन। साथ हैं ब्र.कु. विजय बहन।